ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-3* April- 2021
Innovation The Research Concept

प्रो. सुधीकांत भारद्वाज 'कल्प' विरचित 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य में छन्द–योजना

Prof. Sudhikant Bhardwaj's 'Kalp' Metre Planning in The Epic 'Parashuramodayam'

Paper Submission: 28/03/2021, Date of Acceptance: 17/04/2021, Date of Publication: 25/04/2021

बलवन्त सिंह चौहान
सह आचार्य,
संस्कृत विभाग,
डॉ. बी.आर.ए.राजकीय
महाविद्यालय, श्रीगंगानगर,
राजस्थान, भारत

सारांश

प्रो. सुधीकान्त भारद्वाज 'कल्प' विरचित 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य संस्कृत भाषा का नवीनतम महाकाव्य है। भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिसर्ज, नई दिल्ली से प्रकाशित 17 सर्गीय 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य 1504 श्लोकों में निबद्ध है, जिसमें ऋचीक ऋषि से लेकर भगवान् विष्णु के सोलहवें अवतार परशुराम के जन्म तक की कथावस्तु मिलती है। प्राचीन महाकाव्य परम्परानुसार कविवर कल्प ने उक्त महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग के अन्तिम पद्य में अग्रिम सर्ग में प्रयुक्त होने वाले छन्द का परिचय दिया है। प्रस्तुत महाकाव्य में कुल बारह छन्दों का प्रयोग किया गया है। महाकाव्य में अनुष्टुप, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वंशस्थ, मन्दाक्रान्ता, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीड़ित, शिखरिणी, भुजङ्गप्रयात, शालिनी व रथोद्धता छन्दों को प्रयुक्त किया है।

Prof. Sudhikant Bhardwaj 'Kalpa' Virichit 'Parashuramodayam' epic is the latest epic in Sanskrit language. The 17-page 'Parashuramodayam' epic published from Bhardwaj International Publications, New Delhi, is set in 1504 verses, which contain narratives ranging from the sage Rishi to the birth of Parashurama, the sixteenth incarnation of Lord Vishnu.

According to the ancient epic tradition, the poet Kalp has introduced the verses used in the advance canto in the last verse of each canto of the said epic. A total of twelve verses are used in the presented epic. In the epic, Anushtupa, Indravajra, Upendravajra, Upajati, Vansastha, Mandakranta, Vasantatilaka, Shardulwikrishta, Shikharini, Bhujangaprayat, Shalini and Rathodhata verses are used.

मुख्य शब्द : छन्दसां वेदानाम्, रसोद्दीपनाय, पराशक्तिबीजस्य, स्वात्मानुशासन, वियोगसिन्धौ, प्रणयसुरभे, धैर्यसेतुः, नवसिन्धुसेतुः, प्रियासुसहितं, प्रजारक्षणार्थं, पिण्डतुल्यः।

Chhandasa Vedanam, Rasoddipanaya, Parashaktibijasya, Swatmanushasana, Viyogasindhau, Pranayasurabhe, Dhairyasetu, Navasindhusetu Priyasusahitam, Prajarakshanartham, Pindatulya.

प्रस्तावना

'छन्द' शब्द का व्याकरण शास्त्रीय अर्थ 'बन्धन' है। काव्यशास्त्र में पारिभाषिक शब्द 'छन्द' का भी यही अर्थग्रहण किया गया है। कविता की गति को आबद्ध करने वाले नियम ही छन्द हैं जो उसकी गति को व्यवस्था प्रदान करते हैं। इस प्रकार रुचिकर और श्रुतिप्रिय लयबद्ध वाणी ही छन्द है। 'छन्दयति पृणाति रोचते इति छन्दः।' घञ् प्रत्ययान्त पुल्लिंग 'छन्दः' शब्द का अर्थ वेद और वृत्त है। ऐतरेय आरण्यक में 'छन्द' शब्द का 'वेद' अर्थ में आठ बार प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार वाजसनेयी प्रतिशाख्य में भी 'छन्दस्' शब्द का 'वेद' अर्थ में ही प्रयोग हुआ है। विद्वान् मल्लिनाथ अपनी सञ्जीवनी टीका में इस प्रकार स्पष्ट करते हैं –

'छन्दसां वेदानाम्। छन्दः पादे च वेदे च इति विश्वः।
प्रणव ओङ्कार इव।[1]

'छन्दस्' शब्द का 'वृत्त' अर्थ में प्रयोग अनेकत्र प्राप्त होता है। पुरुष सूक्त में गायत्री छन्द के अर्थ में 'छन्दांसि' पद का प्रयोग निम्न ऋचा में मिलता है।

तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत्।।[2]

उपर्युक्त मंत्र का भाष्य करते हुए सायण लिखते हैं –

तस्माद् यज्ञाच्छन्दांसि गायत्र्यादीनि जज्ञिरे।[3]

यास्काचार्य ने निरुक्त में 'छन्दांसि छादनात्' कहकर 'छन्दः' शब्द का निर्वचन किया है अर्थात् छादन् (आच्छादित) करने के कारण वृत्तों को छन्द कहा जाता है। कविता में छन्दों द्वारा रस, भाव एवं वर्ण्य विषय को आच्छादित किया जाता है, इसलिए इन्हें 'छन्द' कहते हैं। 'छान्दोग्योपनिषद्' में तो छन्दों को देवों के स्वरूप का रक्षक माना गया है। यही कारण है कि इनके ज्ञान के बिना वेदाध्ययन को पाप ही बतलाया गया है।

अविदित्वा ऋषिं छन्दो दैवतं योगमेव च
योऽध्यापयेज्जपेद्वापि पापीयांजायते तु सः।।[4]

छन्द को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि गति का संयम ही छन्द कहलाता है। काव्यों में रस को उद्दीप्त करने के प्रयोजन से छन्दों की योजना करनी चाहिए अर्थात् काव्य में छन्दों के प्रयोग की सार्थकता उनके रसानुसार होने में ही है –

'गतिसंयमश्चछन्दः काव्येषु रसोद्दीपनाय छन्दो योजना कार्या।[5]

वेद रूपी पुरुष के षडंग स्वीकार किये गये हैं। छन्द को वेद रूपी पुरुष का चरण माना गया है। चरणों से प्राणी गतिमान होता है। इसी प्रकार छन्दों के माध्यम से वेदमंत्र भी गति प्राप्त करते हैं तथा आगे बढ़ते हैं। इसी प्रकार किसी भी भाषा को कविता के लिए छन्दों की आवश्यकता होती है।

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्त श्रोतमुच्यते।।[6]

नाट्यशास्त्र के प्रणेता भरतमुनि के अनुसार 'छन्दहीनो न शब्दोऽस्ति, न छन्दः शब्दवर्जितम्।' इस प्रकार छन्दों का शोभन प्रयोग काव्य में विलक्षणता का सर्जन करता है। छन्दोबद्ध महाकाव्य नितान्त रमणीय एवं सहज प्रवाह से युक्त होता है। काव्य में छन्दोविधान एक अच्छे कवि की हृदयस्पर्शी कल्पनाओं और भावों को ओर भी अधिक प्रभावशाली बनाने में सहायक सिद्ध होता है, जिस प्रकार विभिन्न प्रकार के वर्ण पृथक्–पृथक् रसाभिव्यञ्जक होते हैं, उसी प्रकार छन्दों का विभाजन भी रसादि की व्यञ्जना के आधार पर किया जाता है।

शोध उद्देश्य

यह शोध कार्य साहित्यिक विधा से सम्बन्धित है। आजकल भाषा की निरलंकारिता, छन्द मुक्ति और विधाओं के सम्मिश्रण की अपसंस्कृति का बोलबाला चल रहा है। ऐसे समय में साहित्य के विद्यार्थियों को इस शोध कार्य से अनेक लाभ होंगे। उक्त शोधकार्य के उद्देश्य इस प्रकार हैं–

1. साहित्य के भावपक्ष और शिल्पपक्ष की बारीकियों का अध्ययन कर अध्येताओं और शोधार्थियों को साहित्य सृजन के प्रति उन्मुख करना।
2. छन्दों की उपादेयता बतलाकर साहित्य की श्रीवृद्धि करना।
3. साहित्य की विधा विशेषकर महाकाव्य के लक्षणों से अवगत करवाना।
4. छन्दों के विविध प्रकार व उनके सुष्ठु प्रयोग के बारे में अध्येताओं और शोधार्थियों को परिचित करवाना।
5. शोध कार्य करने वाले शोधार्थियों के लिए दिशा तय करना।
6. छन्दों से सम्बन्धित लक्षणों, उनकी लयात्मकता, गत्यात्मकता, वर्णों की गेयता, सुकुमारता व सरसता आदि की शोधार्थियों और अध्येताओं को जानकारी देना ताकि वे काव्य–सृजन की ओर अग्रसर हो सकें।
7. अध्येताओं और शोधार्थियों में शोध–आलेख द्वारा मानवीय भावनाओं को झंकृत कर उनके नाद–सौन्दर्य में वृद्धि करना।
8. काव्य में प्रयुक्त सौन्दर्य बोध से सहृदय पाठकों को अवगत करवाकर नवीन उदात्त कृति के मूल्यांकन के व्याज से नवसृजन को आत्मसात् करने का सुअवसर प्रदान करना।

विषय विस्तार

'परशुरामोदयम्' महाकाव्य में प्रयुक्त छन्द

'अनुष्टुप्' छन्द

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में षष्ठ वर्ण गुरु हो तथा पञ्चम वर्ण लघु हो, द्वितीय व चतुर्थ पाद में सातवां वर्ण ह्रस्व हो तथा प्रथम व तृतीय पाद में सातवां वर्ण गुरु हो – वहाँ 'अनुष्टुप् छन्द' होता है। इस प्रकार 'अनुष्टुप्' छन्द के प्रत्येक चरण में आठ–आठ वर्ण होते हैं, परन्तु मात्राएँ सबकी भिन्न–भिन्न होती हैं।

लक्षण : श्लोके षष्ठं गुरुज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम्।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमदीर्घमन्ययो।।

कविवर कल्प ने 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य के प्रथम सर्ग, बारहवें सर्ग तथा सप्तदर्श सर्ग में 'अनुष्टुप्' छन्द का ही प्रयोग किया है। कविवर ने 'ऋचीकाश्रमवर्णनम्' नामक प्रथम सर्ग का प्रारम्भ 'अनुष्टुप्' छन्द से इस प्रकार किया है।

प्रजास्नेहसुधासिक्तै पार्वतीचुम्बनैर्युतः।
आलिङ्गयतु मां प्रेम्णा, सिद्धिदो गणनायकः।।[7]

इस प्रकार कविवर मंङ्गलाचरण करते हुए कहते हैं कि सन्तान के लिए स्नेह रूपी अमृत से भीगे हुए पार्वती के चुम्बनों से सिक्त सिद्धिदायक श्रीगणेश जी प्रेम से मेरा आलिङ्गन करें। कवि का कथन है कि जैसे बीज की प्ररोहणा अर्थात् आने की शक्ति होती है, वैसे ही ईश्वर की पराशक्ति चेतना होती है। शब्द रूप में विद्यमान सरस्वती कहलाने वाली वही शक्ति मुझे प्रेरित करे –

ईशस्य या पराशक्तिर्बीजस्येव प्ररोहणा।
चेतना शब्दरूपा या, चेतयेयन्मां सरस्वती।।[8]

इन्द्रवज्रा

यह वर्णिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण, तगण, जगण और अन्त में दो गुरु वर्ण के क्रम से कुल 11–11 वर्ण होते हैं –

'स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।[9]

कविवर 'भृगोराश्रमदर्शनम्' द्वितीय सर्ग में ब्राह्मण का धर्म बतलाते हुए लिखते हैं कि ब्राह्मण का धर्म बड़ा कठिन और पूर्णरूप से आत्मानुशासन पर निर्भर करता है। क्योंकि वह अपने आचरण से धर्म सिखाता है इसलिए वह

लोक में आचार्य कहलाता है। वेद ब्राह्मण का मुख होता है तथा तप उसका तेज होता है। ज्ञान उसकी आत्मा, धर्म उसका शरीर, त्याग उसकी आजीविका, क्षमा उसका स्वभाव, सत्य उसकी वाणी तथा करुणा ही उसकी क्रीड़ा होती है। यहाँ भी कवि ने 'इन्द्रवज्रा' छन्द का कमनीय प्रयोग किया है।

विप्रस्य धर्मः कठिनो विशेषः, स्वात्मानुशासनपरो निकामम्।
= 11वर्ण
धर्मोपदेष्टाचरणेन यस्मा, दाचार्यनामाभिदधाति लोके।।[10]
= 11वर्ण
वेदो मुखं तस्य तपश्च तेजो, ज्ञानं तदात्मा च वपुः सुधर्मः।
= 11वर्ण
त्यागो हि वृत्तिः क्षमणं स्वभावः, सत्यं च वाणी करुणा विलासः।।[11] = 11वर्ण

3. **उपेन्द्रवज्रा** – जिस छन्द के प्रत्येक पाद में क्रमशः जगण, तगण, जगण और अन्त में दो गुरु वर्ण हो, उसे उपेन्द्रवज्रा छन्द कहते हैं। इसमें भी इन्द्रवज्रा के समान ही विराम होता है –

उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ।[12]

'ऋचीक–राजपुत्र्याभिमुख्यम्' नामक तृतीय सर्ग में पुत्र से अभिभूत होकर ज्ञानी भृगु एक दिन तपोवन में रहकर वापिस चले जाते हैं। प्रभातकाल में भृगु के चले जाने पर वह तपोवन कुछ क्षण के लिए इस प्रकार अव्यवस्थित हो जाता है, जिस प्रकार विशाल पक्षी के उड़ जाने पर वृक्ष की शाखाएँ अव्यवस्थित हो जाती हैं।

पिता के मिलन से जहाँ ऋचीक का शरीर चमक उठा था वहीं वियोगरूपी समुद्र में डूबने से ऋचीक का वर्ण इसी प्रकार काला हो जाता है जैसे तपाया हुआ लोहा पानी में डूबने से काला पड़ जाता है। कविवर कल्प ने उक्त प्रसंग में 'उपजेन्द्रवज्रा' वृत्त का प्रयोग इस प्रकार किया है –

तपोवनञ्चापि भृगुप्रयाणे, व्यवस्थितं नास पलानि यावत्।
= 11वर्ण
यथा प्रसह्योत्पतति प्रभाते, विशालखेचारिणि वृक्षशाखाः।।[13]
= 11वर्ण
प्रदीप्तदेहः पितृसंगमेन, वियोगसिन्धौ सहसैव मग्नः।
= 11वर्ण
प्रतप्तलौहप्रमितोऽम्बुदिग्धो, दधावृचीकः खलु कृष्णवर्णम्।।[14]
= 11वर्ण

उपजाति वृत्त

इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा इन दोनों के मिश्रित स्वरूप को उपजाति वृत्त कहते हैं। उपजाति छन्द के किसी चरण में इन्द्रवज्रा छन्द होता है तो किसी चरण में उपेन्द्रवज्रा छन्द होता है। इस प्रकार प्रत्येक चरण में वर्णों की कुल संख्या 11–11 होती है।

अनन्तरोदीरित लक्ष्मभाजौ, पादौ यदीयावुपजातयस्ताः।
इत्थं किलन्यास्वपि मिश्रितासु, वदन्ति जातिष्विदमेव नाम।[15]

महाकाव्य के 'राजकुमारी प्रणयवेदना' नामक चतुर्थ सर्ग का प्रारम्भ राजकुमारी की ऋचीक के प्रति गूढ़ आसक्ति से होता है। वह अपने मन की व्यथा किसी को नहीं बताती है। मन ही मन उसका ऋचीक के प्रति इतना अनुराग बढ़ जाता है कि उसका किसी भी कार्य में मन नहीं लगता है। इस प्रसङ्ग में कविवर ने उपजाति छन्द का सुन्दर प्रयोग इस प्रकार किया है –

रागाढ्यवासा मुनिरागकान्यङ् = स्यादिन्द्रवज्रा (11 वर्ण)
गभूषणा सर्वनरोत्तमं तम्। = उपेन्द्रवज्रा (11 वर्ण)
मत्वा सुबाह्वोर्वरहारवृत्तं = स्यादिन्द्रवज्रा (11 वर्ण)
गले निचिक्षेप पतिंवरा सा।।[16] = उपेन्द्रवज्रा (11 वर्ण)
संसृक्तिभावात् प्रथमाद् जलार्द्रा = स्यादिन्द्रवज्रा (11 वर्ण)
मुनेः कठोरे वपुषि प्रतप्ते। = उपेन्द्रवज्रा (11 वर्ण)
अन्तः प्रविष्टा चिरतप्तग्रीष्मे = स्यादिन्द्रवज्रा (11 वर्ण)
यथाद्यवर्षोष्णतले धरित्र्याः।।[17] = उपेन्द्रवज्रा (11 वर्ण)

वंशस्थ छन्द

इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः एक जगण, एक तगण, एक जगण और अंत में एक रगण होता है। इस प्रकार प्रत्येक चरण में कुल 12–12 वर्ण होते हैं।

'जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ'।[18]

महाकाव्य के 'राजकुमारी प्रशिक्षणम्' नामक पञ्चम सर्ग में राजा गाधि अपनी पुत्री सत्यवती के साथ ऋचीक ऋषि के गुरुकुल में पहुँचते हैं। ऋचीक ऋषि राजा गाधि का यथोचित सत्कार करते हैं। इस प्रसङ्ग में दिये जा रहे वृत्तों में 'वंशस्थ' छन्द का प्रयोग इस प्रकार है–

मिथश्च शिष्येषु वदत्सु कौतुकात्, = 12 वर्ण
सितोत्तरीयेषु चलत्सु वेगतः। = 12 वर्ण
नवातिथेर्वै बककूजितस्वरां = 12 वर्ण
सरोवराभां प्रदधार काननम्।।[19] = 12 वर्ण
तदाग्रगामी कुलनायको मुनिश् = 12 वर्ण
चचाल पूजासुमनः करो बुधः। = 12 वर्ण
यथाशिषां राशिरवाप्य विग्रहं = 12 वर्ण
प्रजेशकल्याणहिताय भार्गवम्।।[20] = 12 वर्ण

मन्दाक्रान्ता वृत्त

जिस छन्द में एक मगण, एक भगण, एक नगण, दो तगण और अंत में दो गुरु वर्ण हो उसे 'मन्दाक्रान्ता' वृत्त कहते हैं। इसमें चार, छः और सात अक्षरों के बाद विराम होता है।

'मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैम्भौ नतौ ताद् गुरू चेत्'।[21]

'मन्दाक्रान्ता' छन्द संस्कृत कवियों का परम प्रिय छन्द रहा है। अनेक संस्कृत कवियों ने इस छन्द का प्रचुरता से व्यवहार किया है।

'परशुरामोदयम्' महाकाव्य के 'राजकुमारीसन्देशप्रेषणम्' नामक षष्ठ सर्ग में राजकुमारी के चले जाने के बाद ऋचीक मन ही मन सत्यवती को याद करता है। वह अनुभव करता है कि उसके मन में सत्यवती के प्रति स्वाभाविक आकर्षण है। दैवयोग से सत्यवती के स्वयंवर में अतिथि रूप में आने के लिए ऋचीक के पास राजा गाधि का सन्देश आता है। राजकुमारी सत्यवती की सहेली सुजाता राजकुमारी का सन्देश ऋचीक तक पहुँचाती है। इस प्रसङ्ग में कविवर ने 'मन्दाक्रान्ता' छन्द का कमनीय प्रयोग इस प्रकार किया है–

दृष्ट्वा तेजः प्रथममिलने कार्मुके कौशलं चा–= 17 वर्ण
भूताध्मातं प्रणयसुरभेश्चित्तपुष्पं नवं मे।। = 17 वर्ण
तस्मात्कालादवरयदह भर्तृरूपे भवन्तं, = 17 वर्ण

नान्यः कश्चिद् जगति भविता सर्वकाले पतिर्मे।।[22]
= 17 वर्ण

वसन्ततिलका छन्द

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः एक तगण, एक भगण, दो जगण और अन्त में दो गुरु प्रयुक्त हों, वहाँ 'वसन्ततिलका' छन्द होता है। इस प्रकार प्रत्येक चरण में कुल 14–14 अक्षर होते हैं तथा प्रत्येक चरण में आठ, छः अक्षरों के बाद विराम का प्रयोग होता है।

उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।[23]

'परशुरामोदयम् महाकाव्य के 'श्यामकर्णाश्वानयनम्' नामक अष्टम सर्ग में ऋचीक अपने छात्रों के साथ घोड़े पर सवार होकर पश्चिम की ओर अभियान प्रारम्भ करते हैं। वे 1000 श्यामकर्ण घोड़ों को प्राप्त करने के लिए सिन्धु नदी पर पहुँचते हैं। इस प्रसङ्ग में कविवर ने वसन्ततिलका छन्द का प्रयोग इस प्रकार किया है –

दृष्ट्वा हताशमनसो भृगुजो बभाषे = 14 वर्ण
त्याज्यो विपज्जलधिविप्लवरुद्धवीरैः। = 14 वर्ण
आवर्तचक्रनियतैरपिन धैर्यसेतुः = 14 वर्ण
कार्यं न किञ्चिदपि यन्मतिभिर्न साध्यम्।।[24] = 14 वर्ण
शुष्कान् द्रुमान् वनरुहः खलु पाततेयुः = 14 वर्ण
निर्मीयताञ्च विधिना नवसिन्धुसेतुः। = 14 वर्ण
कार्यं भवेत् सुकठिनं न तु सिद्धिवर्जं = 14 वर्ण
ह्युत्साहमण्डितबलेन न किं सुलभ्यम्।।[25] = 14 वर्ण

शार्दूलविक्रीडित छन्द

इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः एक मगण, एक सगण, एक जगण, एक सगण, दो तगण और अन्त में एक गुरु होता है। इस प्रकार प्रत्येक चरण में 19–19 वर्ण होते हैं तथा प्रत्येक चरण में 12 व 7 पर यति होती है। यह छन्द सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य में महाकवियों का प्रिय रहा है।

लक्षण– सूर्याश्वैर्मसजास्ततः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।।[26]

कवि भारद्वाज रचित 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य के 'ऋचीक–सत्यवतीविवाहः' नामक नवम सर्ग में शार्दूलविक्रीडित छन्द का ही प्रयोग हुआ है। राजा गाधि ऋषि ऋचीक को जब 1000 श्यामकर्ण घोड़े लाने की शर्त रखते हैं तो वह राजकुमारी सत्यवती को प्राप्त करने के लिए भारतवर्ष की सीमा से बाहर जाकर पश्चिमी देशों के राजाओं से घोड़े लेकर वापिस आ जाता है। उसे आशा बंध जाती है कि स्वयंवर में राजकुमारी उसी का वरण करेगी। राजकुमारी सत्यवती भी ऋषि ऋचीक के विषय में बार–बार सोचती रहती है। इस प्रसङ्ग में कविवर ने शार्दूलविक्रीडित छन्द का प्रयोग किया है –

वीणाभ्यासवती कदाचिदपि सा चित्तस्य वैक्लव्यतः। = 19 वर्ण
शृंगाराढ्यनवीनरागमधुरं निस्सारयन्ती स्वरम्। = 19 वर्ण
अद्राक्षीद् भृगुजं स्वतन्मयतया ह्यलिङ्गयन्तं यदा।=19 वर्ण
संवेगोत्थकरावृतस्तनतला रुद्धस्वरा लज्जिता।।[27] =19 वर्ण

शिखरिणी छन्द

इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः एक यगण, एक मगण, एक नगण, एक सगण, एक भगण और अन्त में एक लघु व एक गुरु होता है। इसमें छः व ग्यारह वर्णों के बाद यति होती है। इस प्रकार प्रत्येक चरण में 17–17 वर्ण होते हैं।

लक्षण : रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी।।[28]

'परशुरामोदयम्' महाकाव्य के 'यज्ञोत्साहः' नामक दशम सर्ग में 'शिखरिणी' छन्द का प्रयोग किया गया है। ऋषि ऋचीक और राजकुमारी सत्यवती का विवाह राजा गाधि के राजमहल में सम्पन्न होने पर सर्वत्र खुशियां ही खुशियां बिखरी नजर आती हैं। विवाह सम्पन्न होने के पश्चात् वर–वधू दोनों ही आश्रम में प्रवेश करते हैं। दोनों एक–दूसरे के प्रति अगाढ़ प्यार भरी नजरों से देखते हैं। इसी प्रसङ्ग में 'शिखरिणी' छन्द का प्रयोग द्रष्टव्य है –

सुदीर्घापाङ्गे कज्जलरचितरेखे सुनयने, = 17 वर्ण
निगूढ़ं कामापूरितहृदयलास्यं निदधती। = 17 वर्ण
हिनया तस्या ईषन्नतमृदुलपक्ष्माग्रनिबहे, = 17 वर्ण
तमाभासेतां सौधकलश इवार्धाग्रपिहिते।।[29]= 17 वर्ण
भृशं स्नातो नेत्रामृतमदजलासारनिबहैः, = 17 वर्ण
कटाक्षोदासृष्टैर्मदनकुसुमार्ध्यैरिव रसैः। = 17 वर्ण
प्रमत्ताङ्गः प्रस्पन्दितमनसिजाढ्योऽपि सुमुनिः= 17 वर्ण
बभूव प्राप्तुं तां भुजयुगलपाशेऽवशमनाः।।[30]= 17 वर्ण

भुजङ्गप्रयात छन्द

इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः चार यगण होते हैं। प्रत्येक चरण में कुल 12–12 अक्षर होते हैं तथा पाद के अन्त में यति का प्रयोग होता है।

लक्षण : भुजङ्गप्रयातं भवेद्यैश्चतुर्भिः।।[31]

'परशुरामोदयम्' महाकाव्य के 'गाधेराश्रमप्रयाणम्' नामक एकादश सर्ग में भुजङ्गप्रयात छन्द का प्रयोग हुआ है। पुत्री सत्यवती का विवाह होने के पश्चात् राजा गाधि व उनकी पत्नी पुत्र के अभाव में उदास रहने लग जाते हैं। गाधि की पत्नी राजा को दूसरा विवाह करने की सलाह देती है और कहती है कि पुत्र के अभाव में राजा का कोई उत्तराधिकारी नहीं हो सकता। इसी प्रसङ्ग में पुत्र के महत्त्व को बताते हुए कविवर द्वारा भुजङ्गप्रयात छन्द का कमनीय प्रयोग द्रष्टव्य है–

न पुत्रं विना सम्पदो हर्षदात्र्यो, = 12 वर्ण
न राज्यं धनं वैभवं मानदानम्। = 12 वर्ण
समे निर्दहन्त्यग्निसक्तं यथाज्यम्, = 12 वर्ण
गृहस्थे स्थितानां सुतो ह्याद्यसौख्यम्।।[32]= 12 वर्ण
चरन्तोऽपि सामान्यवृत्तिं गृहस्था, = 12 वर्ण
यतन्ते सुताप्त्यै विहायापि सर्वम्। = 12 वर्ण
यतेरन्त भूपाः कथं राज्यहेतोः, = 12 वर्ण
प्रजारक्षणार्थं प्रशास्तारमाप्तुम्।।[33] = 12 वर्ण

शालिनी छन्द

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः एक मगण, दो तगण और दो गुरु के क्रम से 11–11 वर्ण प्रयुक्त हों, उसे 'शालिनी' छन्द माना गया है। इसमें चार और सात पर यति होती है।

लक्षण : शालिन्युक्ता म्तौ तगौ गौऽब्धिलोकैः।।[34]

'परशुरामोदयम्' महाकाव्य के 'जमदग्निजन्म' नामक चतुर्दश सर्ग में कालक्रम से सत्यवती को पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है, जिसका नाम 'जमदग्नि' रखा जाता है। पुत्र जन्मोत्सव के प्रसङ्ग में कविवर 'कल्प' द्वारा 'शालिनी' छन्द का किया गया प्रयोग द्रष्टव्य है –

आयाते काले यथासृष्टिधर्मं = 11 वर्ण
जज्ञे वह्नेः पिण्डतुल्यः सुतेजाः। = 11 वर्ण
बालो विद्युत्सन्निभः कृच्छ्रदर्शः = 11 वर्ण

सूर्योऽन्यो कश्चिद् यथा योगपाकात्।।[35] = 11 वर्ण
लोकानां सम्मर्दसंक्षुब्धगेहं = 11 वर्ण
ह्याचार्यस्याभूत्, सुतीर्थं प्रपूतम्। = 11 वर्ण
धन्यो धन्यो व्याहरन्तः ऋचीकं = 11 वर्ण
स्वात्मानं धन्यान् हृदा मेनिरे ते।।[36] = 11 वर्ण

रथोद्धता छन्द

इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः एक रगण, एक नगण, एक रगण और अन्त में एक लघु और एक गुरु के क्रम से 11–11 वर्ण होते हैं।

लक्षण : रान्नराविह रथोद्धता लगौ।[37]

'परशुरामोदयम्' महाकाव्य में 'जमदग्नितीर्थाटनम्' नामक पञ्चदश सर्ग में 'जमदग्नि' की बाल्यावस्था के चित्रण में कविवर का 'रथोद्धता' छन्द का प्रयोग दर्शनीय है –

बालकेलिसुलभैः स चेष्टनैः, = 11 वर्ण
सौम्यहासकिरणैश्च मातरम्। = 11 वर्ण
प्राकृतैश्च रुदनैरमोदयत्, = 11 वर्ण
प्रीणते खलु न कं क्रियाः शिशोः।।[38] = 11 वर्ण
सर्वशास्त्रकुलकं सवृत्तिकं, = 11 वर्ण
जिह्वया ग्रथितरश्मिनेव तम्। = 11 वर्ण
संश्रितं सममयत्नतो यथा, = 11 वर्ण
कृष्यते शुभफलं स्वकर्मणा।।[39] = 11 वर्ण

निष्कर्ष

इस प्रकार प्रो. सुधीकान्त भारद्वाज रचित 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य में कुल बारह छन्दों का प्रयोग किया गया है। कुल 1504 पद्यों में से प्रथम सर्ग, बारहवें सर्ग व सतरहवें सर्ग के कुल 346 पद्यों में 'अनुष्टुप्' छन्द का, द्वितीय व सोलहवें सर्ग के कुल 125 पद्यों में 'इन्द्रवज्रा' छन्द का, तृतीय सर्ग के 87 पद्यों में 'उपेन्द्रवज्रा' छन्द का, चतुर्थ सर्ग, सप्तम सर्ग, तेरहवें सर्ग और सोलहवें सर्ग के कुल 337 पद्यों में 'उपजाति' वृत्त का प्रयोग किया गया है। महाकाव्य के पञ्चम सर्ग के 120 पद्यों में 'वंशस्थ' छन्द का, षष्ठ सर्ग के 76 पद्यों में 'मन्दाक्रान्ता' छन्द का, अष्टम सर्ग के 83 पद्यों में 'वसन्ततिलका' छन्द का, नवम सर्ग के 72 पद्यों में 'शार्दूलविक्रीडित' छन्द का, दशम सर्ग के 58 पद्यों में 'शिखरिणी' छन्द का, चतुर्दश सर्ग के 60 पद्यों में 'शालिनी' छन्द का व ग्यारहवें सर्ग के 64 पद्यों में 'भुजङ्गप्रयात' व पञ्चदश सर्ग के 76 पद्यों में 'रथोद्धता' छन्द का प्रयोग कविवर ने किया है।

इस प्रकार 'परशुरामोदयम्' प्रबन्ध में महाकाव्य के सभी गुण विद्यमान हैं। महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग के अन्तिम पद्य में छन्द परिवर्तन करके अग्रिम सर्ग में सम्बन्धित छन्द का कविवर ने कमनीय प्रयोग किया है। महाकाव्य में कविवर ने छन्दों का श्लाघनीय प्रयोग किया है, जिससे उक्त कृति आधुनिक काल की सफलतम कृति कही गई है। महाकाव्य में 'अनुष्टुप्' छन्द का सर्वाधिक तथा शिखरिणी छन्द का सबसे कम प्रयोग कविवर ने किया है। कविवर ने महाकाव्य में अनेकविध छन्दों का प्रयोग किया है, फलस्वरूप काव्य में सरसता और संगीतात्मकता पदे–पदे परिलक्षित हो रही है।

सन्दर्भग्रंथसूची

1. *रघुवंशम् (1–11) सञ्जीवनी टीका*
2. *ऋग्वेद 10/98*
3. *ऋग्वेद 10/90/9 (सायण भाष्य)*
4. *निरुक्त 7/3/12*
5. *साहित्यानुशासनम्, पृ.सं. 767*
6. *पाणिनीय शिक्षा – 41*
7. *परशुरामोदयम् महाकाव्य 1/1, भारद्वाज इंटरनेशनल पब्जिसर्ज, नई दिल्ली, वर्ष 2009*
8. *परशु. 1/2*
9. *वृत्तरत्नाकर – 3/28*
10. *परशु. 2/59*
11. *परशु. 2/60*
12. *वृत्तरत्नाकर 3/29*
13. *परशु. 3/3*
14. *परशु. 3/4*
15. *वृत्तरत्नाकर 15/30–31*
16. *परशु. 4/6*
17. *परशु. 4/7*
18. *वृत्तरत्नाकर 3/46*
19. *परशु. 5/14*
20. *परशु. 5/15*
21. *वृत्तरत्नाकर 3/97*
22. *परशु. 6/51*
23. *वृत्तरत्नाकर 3/79*
24. *परशु. 8/42*
25. *परशु. 8/43*
26. *वृत्तरत्नाकर 3/101*
27. *परशु. 9/5*
28. *वृत्तरत्नाकर 3/93*
29. *परशु. 10/3*
30. *परशु. 10/4*
31. *वृत्तरत्नाकर 3/55*
32. *परशु. 11/10*
33. *परशु. 11/11*
34. *वृत्तरत्नाकर 3/34*
35. *परशु. 14/51*
36. *परशु. 14/53*
37. *वृत्तरत्नाकर 3/38*
38. *परशु. 15/2*
39. *परशु. 15/5*